रिकार्ड: कौन आया मेरे मन... ओम शान्ति: प्रात:क्लास 8-1-1968

बाप बैठ बच्चो को समझाते है। दुसरी कोई भी संस्था नही होती है जो कि कहे कि बाप बैठबच्चो को समझाते है। बच्चे जानते है कि बराबर सब बच्चो का बाप एक ही है। सब ब्रदर हुड है। उस बाप सजरुर बच्चो को वर्सा मिलता है। चक्र पर भी तुम अच्छी रीती समझा सकते होकि यह है संगम युग। जबकि मुक्ति और जीवन मुक्ति मिलती है। तुम बच्चे तो जीवन मुक्ति मे जाओगे बाकी तो सभी मुक्तिधाम मे ही बैठ जावेंगे। सदगति दाता लिबरेटर गाईड उनको ही कहा जाता है। कई-2 बहुत अच्छी पुआईन्टस होती है। रावण राज्य मे कितने ढेर मनुष्य है। राम के राज्य सतयुग मे एक ही आदी सनातन देवताओं का राज्य था। आर्य और अनार्य कहते है नां। आर्य सुधरे हुओं को और अनार्य ना सुधरे हुये को कहा जाता है। इस अर्थ को भी मनुष्य नही जानते है। सुधरयल ही तो फिर अनसुधरल कैसे बनते है। आर्य कोई भी धर्म तो है ही नही। सुधरयल तो यह देवतोय ही थे। फिर 84 जन्मो के बाद अनसुधरेले बनते है। जो ही ऊंच ते ऊंच पुज्य वो ही पुजारी। हम सो का अर्थ भी बाप ने समझाया है। सीढ़ी पर समझाना तो बहुत ही अच्छा है। ऐसे नही किआत्मा तो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा, नही। यह तो विराट नाटक है नां। अब तुम समझते हो कि हम सो पुज्य सो ही फिर पुजारी बनते है। हम सो देवता फिर हम सो ही क्षत्री... बनते हो। लिखा हुआ भी एक्यूरेट चाहिये। सीढ़ी तो जरु उतरेंगे नां। यह भी हिसाब है कि पुरे 84 जन्म कौन लेते है। बाप कहते है कि तुम तो अपने जन्मो को ही नही जानते हो मै आकर बताता हूं। यह है ही 84 का चक्र। उसमे ही हमसो देवता... बनते है। 2।नन्म तो नामी ग्रामी है। मनुष्य इन बातो को कुछ भी समझते नही है। बिलकुल ही बन्दर बुधी तमोप्रधान है। अबतुमको सारी नालेज है। परन्तु समझते बहुत मुशकल से है। बाप खुद भी कहते है कि कोटो मे कोऊ ही आकर इस ज्ञान को लेंगे। और देवता के धर्म का बनेंगे। इसमे आशर्चय नही खाना चाहिये। चक्र पर तो समझाना बहुत ही सहज है। यह सतयुग तो यह कलयुग देखो। कोई तो सतयुग को देख कर बावरे हो जाते हैं। और सतयुग मे होते ही है बहुत थोडे। झाड छोटा होता है फिर वृधी को पाता है। इस झाड का तो किसीको भी पता नही है। और ब्रहमा की बात पर भी बिगडते है। बोलो कि ब्रहमा के मुखवंशी ब्राहमण तो जरु ही चाहिये नां। यह सभी एडापटेड बच्चे है। वो ब्राहमण तो मुखवंशावली है। यह ब्राहमण मुखवंशावली है। बाप तो आते ही है पतित दुनियां मे। यह तो पराया रावण का राज्य है। बाप को ही आकर राम राज्य स्थापन करना होता हैं। तो किसीमे तो प्रवेश करेंगे नां। जरुर पतित तन मे ही आना होगा। यह तो देखो नां झाड मे एकदम पिछाडी मे खडा है। इनकी जडजडीभूत तमोप्रधान अवस्था तो है ही नां। बाप भी कहते है कि बहुत जन्मो के अन्त वाले शरीर मे मै प्रवेश करता हूं। यह अन्तिम चौरासिवां जन्म है। तपस्या कर रहे है। हम भला इनको भगवान कहा कहते है?भगवान को ही ठिक्कर-2 मे समझ लेते है तो खुद ही ठिक्कर बुधी बन गये है। बाप कहते है कि कितने मूर्ख बन जाते हो। देवताओं की तो बात ही न्यारी है। अभी तुम यह पढाई पढ़ कर यह पद पाते हो। कितनी तो ऊंचे पढाई है। इन देवताओं को भगवा भगवान भगवती कहते है। क्योकि पवित्र है। भगवान दवारा इनके धर्म की थापना होती है तो जरुर भगवान भगवती होने चाहिये नां। परन्तु इनको कहा जाता है महाराजा महारानी। श्री ल-न। भगवान भगवाती कहना यह भी अन्धश्रधा हो जाती है। भगवान तो एक ही होगा नां। शिव और शंकर का भी तुम ही भेद बताते है। शंकर वास्तव मे तो कोई भी पाप कर नही सकता है। हिसंक बन नही सकता। आरव खोल खोलने से ही विनाश हो सकता है क्या?मनुष्य तो समझते है कि शंकर विनाश करते है। हम भी तो लिखते है नां शंकर दवारा अनेक धर्मो का विनाश होता है। अगर नही देवे तो तीन चित्रो की कह शोभा नही रहती है। तिन मूर्ति तो है नां। वास्तव मे तो यह होना नही चाहिये। परन्तु नां देखेने से मनुष्य और ही मुंझ जावेंगे। इसलिय ही तो तुम शिव और शंकर को अलग-2 कर बताते हो। ऐसे नही कहते हो कि यह है ही नही। कहेंगे कि देवताओं को भी यह उडा देते है। डिफीकल्ट बाते है नां।तुमको तो सारा चक्र ही ही नही।

8-1-68

चक्र बुधी मे है। जो जो महारथी है उनकी। इसमीके लिय तो कहेंगें भी नही। भल सुनते तो है परन्तु समझा नही सकते है। बुधी मे ही नही ठहरता है। तो क्या होगा पाईपैसे की दास-दासियां जाकर बनेगी। यह समझना तो बहुत ही सहज है। आगे-2 चलकर तुम ो यह सारा सा० होगा। परन्तुउस समय तो कुछ भी कर नही सकेंगें। खेल तो घुरा हो गया नां। समय ही पुरा हो जावेगा फिर क्या कर सकेंगें। देखेंगें कि हम कौनसी दासी बनेंगें। सब सा० होगा। देख कर ही बाबा ताकीद करवाते रहते है। परन्तु देखा जाता है कि ऊंच चढ़ जोव यह हो नही सकता है। साफ बर्तन ही नही है। बुधी मे किचर पटी भरी हुई है। हर एक क्षेन्टर मे ही ऐसे किचरे बुधी वाले है। हां करके पाई पैस की प्रजा मे आ जावेंगें। इसमे तो पुरुषार्थ बहुत करना चाहिय। चित्रो पर समझाने की प्रैकिटस करनी चाहिय। नां समझा तो पिछाडी तक भी नां ही समझेंगें नां ही किसीको समझा ही पावेंगें। यह तो कोई को भी समझाने की बाते है। ड्रेन की तो कोई बात ही नही है। बडे-2 स्थानो पर प्रदर्शनी म्यूजियम्स होने चाहिय। इसेस ही नाम भी होता है। बाबा ने कहा था कि सबेसे प्रोव ओपीनियन लेते है। इवो भी निकालना चाहिय। परन्तु बच्चो मे तो थोडा सा ज्ञान आने पर ही अंहकार आ जाता है। प्रवाह ही नही रखते है। किसीकी भी नही सुनते है। यह तो बच्चो को बहुत सर्विस करनी चाहिय। इसमे तो जांच भी करनी होती है कि समझने वाला है कि नही। यह नई दुनियां तो यह पुरानी दुनियां है। यह तो कोई भी समझ सकते है। सिर्फ समय लम्बा कर देने कारण ही मनुष्य मूंझते है। पहले-2 तो बाप का पुरा-2 परिचय देना चाहिय। जो-2 देहीअभिमनी होकर रहते है अतिइन्द्रय सुख भी उनको ही रह सकता है। सिर्फ भाषण मात्र ही से काम नही होगा। बाबा ने समझाया है कि भाषण करते हो तो समझो कि मै भाई को समझाता हूं। आत्मअभिमानी बनना है नां। यह तो बहुत ही मेहनत की बात है। बार-2 बच्चे भूल हो जाते है। बाप ही आकर बच्चो को समझाते है। गायन भी है नां कि आत्मीय परमात्म अलग रहे... इसके अर्थ को भी तुम्ही अच्छी रीती समझ सकते हो। जो महारथी है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना इसमे ही बहुत प्रैकिटसहै। तभी तुम अपने को पावरफुल समझोगें। जो अपने को आत्मा ही नही समझते है वां भला क्या धारना करेंगें। हम आत्मा बाप को याद करते है। याद से ही जोहर भरेगा। धन का बल नही। योगबलकहा जाता है। बाप कहते है कि तुम विश्व का मालिक बनते हो। तुम थे तो जरूर। औरो को भी आपने समान बनाना है। जबतक बहुतो कों आप समान नही बनाया है तब भी विनाश नही होगा फिर कितनी भी बडी-2 लडाई यां लगे। बाम्बस तक भी तो लडाई आई है फिर बन्द तो हो ही गई है नां। अभीतो बहुतों के पास बम्स है। यह कोई खाने की चीज नहीं हैं। पुरानी दुनिया का विनाश का हो एक आदी सनातन देवी देवता धर्म स्थापन होना ही हैं। इस संगम पर ही स्थापन होता हैं। यह भी समझाना पड़ता है। तुम देखेंगे थोड़े समय बाद सभी कहेंगे बरोबर यह वही महाभारत लड़ाई हैं। भगवान हैं जरूर। जब तुम बहुतों को देखेंगे तब समझेंगे यह तो ठीक कहते हैं। यह बुधि को पाते रहते हैं। याद में तो बहुत ही माईट हैं। तुम जितना2 याद में रहेंगे उतना उतना ताकत भरेंगी। बाप की याद से तुम ही औरों को लाईट देते हो। यहां निष्ठा में भी बैठने लिए ला कहते हैं मभा के पीछे कोई गदी पकड़े जो सभी को दृष्टि दे, मभा के जगह पर दीदी हैं। परन्तु इनको भी जाना पड़ता है। मभा भी जाती थी। परन्तु सीट पकड़नी होती है। यह दादा(ब्रहमा) भी कहते हैं मेरे से भी बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। प्रदर्शनी आद में कितने मेहनत करते हैं। सारा दिन सर्विस करते रहते हैं। अभी थोड़ी देरी है। योग में यथार्थ रीति कोई रह नहीं सकते। खुद भी फील करते हैं योग में हम कम हैं। इसलिए तीर लगता नहीं है। भगवान कुमारियों में भी बैठ बल भरते हैं। तुम प्रजापिता ब्रहमा कुमार, कुमारियां हो ना। यह ब्रहमा। तुम एडाप्टेड बच्चे हो। क्रियटर तो एक ही है। बाकी सभी पढ़ रहे हैं। इसमें यह भी आ गयी

फिर भी रचना हो गये ना। तुम देवता बनने लिए दैवी गुण धारण कर रहे हो। मेहनत लगती है। कहां2 दो मिले भी नहीं चल सकते। जैसे कि रीति पड़ गई है। बाबा नाम नहीं लेते× लेते हैं। नहीं तो समझना चाहिए बाबा सच्च कहते हैं। बराबर अवगुण है। बच्चे भी मील करते हैं, एक दो के स्वभाव को समझ सकते हैं। जिनके साथ रहना होता है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम ही डबल सिरताज थे। अभी फिर बनते हैं। पहले2 तुम किसको समझाते हो तो मानने को तैयार नहीं होते हैं। फिर धीरे2 समझते हैं। इसमें बुधि भी बहुत चाहिए। आत्मा में बुधि है ना। सत-चित-आनन्द... है। तुमको अभी देहीअभिमानी बनाया जाता है। जब तक बाप न आये तब तक कोई देहीअभिमानी होता नहीं। सभी देहाभिमानी हैं। अभी बाप कहते हैं तुम आत्माभिमानी बनो। मामेकं याद करो तो तुमको मेरे से शक्ति मिलेगी। यह धर्म बहुत ताकत वाला है। सारे विश्व पर राज्य करते हो। कम बात है क्या। तुमको ताकत मिलती है बाप के साथ योग लगाने से। यह है नई बात। तो अच्छी रीत समझाना पड़ता है। आत्माओं का बेहद का बाप यह है। वह है ही नई दुनिया का रचता। नई दुनिया में इन्हीं का राज्य था। अब नहीं हैं। फिर आकर जरूर लेंगे ना। नहीं तो विश्व का आक्युपेशन बताओ क्या आकर किया? कृष्ण जयन्ति और शिव जयन्ति दोनो को मनाते हैं। अब दोनो में बड़ा कौन? ऊंच ते ऊंच जरूर निराकार को ही कहेंगे। शिव तो निराकार हैं ना। उसने क्या किया जो शिवजयन्ति मनाई जाती है। कृष्ण ने क्या किया? यह तो अभी धर्म की स्थापना होती है। लिखा हुआ भी है परम पिता परमात्मा साधारण तन में आ स्थापना करते हैं। कहीं आत्मा 84 जन्म लेती है। श्रीकृष्ण के चित्र में लिखत बड़ी अच्छी है। मनुष्य समझते हैं कृष्ण कैसे 84 जन्म लेंगे। तब कौन लेंगे? 84 जन्मों की कहानी तो जरूर चाहिए ना। कोई को पता भी नहीं है पूज्य सो पुजारी फिर कैसे बनते हैं। तुम कोई को समझाओ तो कहेंगे यह तो तुम्हारा कल्पना है। अच्छा फिर भलतुम अपना रास्ता लो। माथा मारने की दरकार ही नहीं। अनेक प्रकार के मत-मतान्तर है। श्री मत तो एक ही बार मिलती है। बाकी हैं मानव मत। श्रीमत से तुम श्रेष्ठ बनते हो। मानव मत से श्रेष्ठ कैसे बनेंगे। यह ईश्वरीय मत तुमको एक ही बार मिलती है। सो भी पुरुषोत्तम संगम युग पर। देवतायें तो मत देते नहीं। मनुष्य से देवता बन गये फिर खलास। उनको मत चाहिए ही नहीं। वहां गुरु आद भी नहीं करते। यहां मनुष्य मत लेते हैं गुरुओं की। वे तो सभी हैं पतित। अगर कोई को पतित कहो तो बिगर पड़ेंगे। इसलिए युक्ति से समझाना है। वह सन्यासी हैं ही हठयोगी। हम हैं राजयोगी। हठयोगी कब राजयोग सिखला नहीं सकते। सन्यासियों को अधिकार नहीं है। वह हैं ही निवृति मार्ग वाले। तीर्थों आद पर भी प्रवृति मार्ग वालेही जाना है। आगे पण्डे लोग जाते थे। अभी तो सन्यासियों को ले जाते हैं। वास्तव में उन्हीं के लिए हैं निषेध। वह निवृति मार्ग ही बिलकुल अलग है। उन्हीं को माता का मुंह भी नहीं देखना है। अभी भी कोई होंगे जो माताओं को पीठ दे बैठते हैं। उनके मत वाले भी कोई तो गदी पर होंगे ना। तुम बच्चों को कोई बात में मुंझने की दरकार नहीं है। टाईम तो है ही स्थापना में, बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जो भी पास्ट हुआ ड्रामा अनुसार ठीक ही चला। यह ड्रामा बना हुआ है जो रिपीट होता रहता है। तुम्हारी सर्विस भी कल्प पहले मुफिक होती है। ड्रामा ही तुमको पुरुषार्थ कराती है। पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध मिल न सके। पुरुषार्थ जरूर करना पड़ता है। वह भी करते हो कल्प पहले मिशल। पुरुषार्थ वालों की चलन से तुम समझ सकते हो तब तो ग्रुप देख रेसा समझाने वाला देते हैं। बहुत हैं जिनमें न ज्ञान है न योग है। पढ़ाने वाला बाप तो अच्छी रीत जानते हैं। कितनी बेहद की विशाल बुधि बनाते हैं। नशा रहना चाहिए भगवान हमको पढ़ाते हैं। हम किसके बच्चे हैं। बाप ही टीचर भी है। वैसे तो टीचर दूसरा क्षेत्र हैं ना। बच्चे दूसरे होते हैं। कहां तो तुम भगवान के बच्चे भी हो, भगवान तुमको पढ़ाते भी हैं। कोई न पढ़ सकते हैं तो फिर भाग जाते हैं। भगवान भी समझते हैं यह हमारा बच्चा नहीं है। तुम देखते हो भगवान के बच्चे थे पढ़ते थे। फिर भाग गये। फिर समझ में आ जाता है तो पढ़ने लग पड़ते हैं। फिर योग में अच्छी

8-1-68

रीत रहे तो ऊंच पद पा सकते हैं। समझेंगे बराबर हम ने बहुत ही टाईम वेस्ट किया है। ऐसा स्कूल छोड़ दिया। मैं कितना नीच हूं। अब तो जरूर फिर बाप से वर्सा लेंगे। बाबा बाबा कह रोमान्च खड़ी हो जानी चाहिए। बाबा हमको यह पद प्राप्त कराते हैं। कितना हम भाग्यशाली हूं। घड़ी2 बाप की याद रहे। डायरेक्शन पर चलते रहे तो बहुत उन्नति हो सकती है। उनको सभी बहुत रिगार्ड दे देवे। अच्छे सर्विस रखने वाले की चाकरी भी करना चाहिए ना। यह ऊंच पद पावेंगे हम दास-दासियां बनेंगी। तो रिगार्ड रखना चाहिए ना। अभी रिगार्ड न रखेंगे तो और ही कम पद पावेंगे। बाप कहते हैं पढ़े आगे अनपढ़े मरी जावेंगे। देहाभिमानी को कहा जाता है असुर। दैवी गुणों की धारणा हो न सके। तुम्हारा चेहरा तो बहुत ही फर्स्ट क्लास होना चाहिए। अति अतीन्द्रिय सुख उन्हों से पूछो जिनको भगवान पढ़ाते हैं। कितना पढ़ाई पर अटेन्शन और श्रीमत पर चलना चाहिए। श्रीमत पर चलते ही नहीं। मानव मत पर चलते हैं। तुम्हारी योग ताकत से विश्व भी पवित्र बनते जावेंगे। योग से ही तुम सृष्टि को पवित्र बना रहे हो। कमाल है। गोवर्धन पर्वत को दिखाते हैं ना चीच (छोटी अंगुली) पर उठाया। इस छी2 विश्व को जिन्हों ने पवित्र बनाया है उनकी यह निशानी है। तुम कितने थोड़े हो। महारथी राजाई पद पाने वालों की ही ताकत है। जो योग में ठीक रहते है। बाकी तो प्रजा है। यह सेना है ना। इसमें कमान्डर, कैप्टन है, मेजरस हैं, करनल आदि सभी चाहिए ना। बाबा सब बतायें सकते हैं। तुम अपना आपे ही निकाल सकते हो। तुम्हारी यह सच्ची2 सेना है। बाप खेवईया भी है। गायन भी है नईया लूडे2 पर डूबे नहीं। जो ब्राह्मण बने हैं वह स्टीमर में बैठे हैं। स्टीमर तो बहुत बड़ा है ना। इसकी शास्त्रों में भी बात है। कोई स्टीमर से उतर खान-पान में लग जाते हैं तो रहे जाते हैं। यह भी सीन है। स्टीमर तो चलता ही रहता है। बुधि का योग ठीक रहे तो नईया चलती रहे नहीं तो खड़ी हो जाती है। कितना भी समझाओ तो लायक बन नहीं सकते। ऊंच पद पाने का। राजाई के लायक थोड़े ही हैं। 1608 के माला में जाना उन से तो प्रजा में बड़े अच्छे धनवान होते हैं। यहां भी गवर्मेन्ट धनवानों से कर्जा उठाती हैं। अभी तुम बच्चे बहुत समझु बन गये हो। बाकी तो सभी बेसमझ है। किसको समझा नहीं सकते हैं तो बेसमझु ठहरे ना। फिर और भी बहुत सबजेक्टस हैं। उन से भी मार्कस मिल जाती है। बाप को याद करते तो बहुत ही खुशी होती है। एकदम रोमांच खड़ी हो जाती है। बाप कहते हैं मेरे बच्चे तुम मेरे से भी जास्ती मेहनत करते हो सारा दिन। मैं अपने से तुमको जास्ती मान देता हूं। जो सर्विस करते हैं। बाकी तो डिससर्विस भी बहुत ही करते हैं। बच्चों को तो बहुत ही खुशी रहनी चाहिए। राजाई स्थापन हो रही है। इसके लिए बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। औरों का भी कल्याण करना है। याद में रह भोजन बनावे तो भी बहुतों का कल्याण हो सकता है।

वास्तव में कहां घर में त्रिमूर्ति का चित्र रखना भी रांग है। पूछ पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं मामेकं याद करो। तो शिव का चित्र रख दो। ऊंच ते ऊंच शिवबाबा है। वह ही ज्ञान देते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा का भी चित्र होने से फिर वह सामने आवेंगे। इनको भूल जाना है। यह बीच में आना न चाहिए। अपने को आत्मा समझना है। अभी हम वापस जाते हैं। देह धारी कोई भी याद न आवे। आत्मा की कट उतर जावे तो हम अपने घर जावें। उछलना चाहिए। कट तो बहुत ही खराब है। तुम बच्चे देहीअभिमानी बनने से 21 जन्मों का वर्सा पाते हो। वहां कर्म अकर्म हो जाते हैं। विकर्म कोई होता नहीं। यहां रावण राज्य होने कारण विकर्म हो जाते हैं। कर्म, अकर्म, विकर्म का अर्थ भी तुम बाप द्वारा जानते हो। है तो गीता का ही अक्षर। अभी तुम समझते हो वह है झूठी गीता। उसको कहेंगे भक्ति। ज्ञान नहीं कहेंगे। ज्ञान दिन भक्ति रात। तुम्हारी रात थी अब फिर देवता बन दिन में जा रहे हो। तो बच्चों को नशा रहना चाहिए। जैसे शराब पीते हैं तो उसका नशा चलता है। फिर दो चार घन्टे बाद उतर जाता है, तुम्हारा नशा स्थाई रहना चाहिए। अच्छा मीठे 2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। और नमस्ते।